Rao Jaimal Rathore

Rao Jaimal was born on September 17th, 1507 as the eldest son of Rao Veeramdeo, the ruler of Merta. In 1544, after the death of his father, Jaimal ascended to the throne of Merta. He is remembered widely as one of the greatest warriors, generals, military strategists and statesmen to be born in the gifted land of Bharatvarsha. Hailing from the illustrious clan of Rathore rulers in Marwar or Jodhpur, he ruled over the rich realms of Merta and Badnore.

Rao Jaimal won immortal fame and glory as a soldier and leader due to his strong defence of the fort of Chittor during the Mughal invasion of 1568. When Akbar launched a full-scale invasion of Mewar in 1567, Maharana Udai Singh, the ruler of Mewar, eagerly sought the assistance of Jaimal in bolstering the counter-offensive. When the siege of Chittor assumed dangerous proportions, the Maharana and his family vacated the fort in order to wage a longer struggle. The Maharana, then, appointed Jaimal as the commander-in-chief of the war effort.Thus, in the long war that followed, Jaimal led the Mewari forces against a massive Mughal army, thus, displaying exemplary military skills.

Despite facing heavy odds, Jaimal continued attacking the invaders with such ferocity that a stalemate situation soon arose. Facing deadly cannon-fire, exploding ramparts, attack of deadly arrows and a rising toll of casualties, he struck back with double force to destroy the enemy ranks. After holding on for more than a year, when the tide started turning against Mewar due to sheer mismatch of numbers and resources, Jaimal decided to fight to the finish. Along with his trusted men who had bled besides him, he opened the gates of the fort and charged into the enemy ranks. He was martyred at the gates of Chittor fort where a cenotaph celebrates his penultimate sacrifice even to this day.

Jaimal's lion-hearted courage and invincible fighting spirit, earned him free-flowing praise and admiration not only in the annals of his own land but also in those of his adversaries. Akbar, his generals and the Mughal historians were awe-struck by the bravery with which Rao Jaimal offered a stout and resolute resistance against the invading force. After the catastrophic war of Chittor, a stone statue of Jaimal seated on an elephant was installed at the main-gate of Agra fort as a mark of respect for the great fighter. Indeed, Jaimal was one of the most influential and leading politicians of his age who impacted the turn of events both at the provincial and imperial levels.

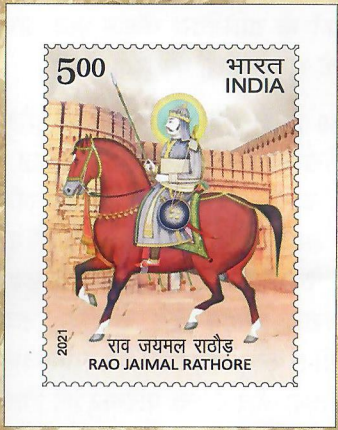
Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Rao Jaimal Rathore.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure	:	Shri Sankha Samanta
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Based on information received from the proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



राव जयमल राठौड़
RAO JAIMAL RATHORE

विवरणिका BROCHURE

राव जयमल राठौड़

राव जयमल राठौड़ का जन्म 17 सितंबर, 1507 को हुआ था। वे मेड़ता के राजा राव वीरमदेव के ज्येष्ठ पुत्र थे। वर्ष 1544 में पिता की मृत्यु के बाद जयमल ने मेड़ता की राजगद्दी संभाली। राव जयमल को भारत वर्ष की वीर भूमि पर जन्मे महानतम योद्धाओं में से एक थे और जिन्हें सेनापति, सैन्य रणनीति के महारथी तथा राजनीतिज्ञ के रूप में सम्मान पूर्वक याद किया जाता है। मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ शासकों के प्रतिष्ठित वंशज राव जयमल ने मेड़ता और बदनोर के समृद्ध क्षेत्रों पर राज किया।

1568 ई. में मुगल आक्रमण के दौरान, चितौड़ के किले की अभेद्य मोर्चाबंदी कर राव जयमल ने एक सैनिक और सेनापति के रूप में अविस्मरणीय यश और कीर्ति अर्जित की। 1567 में जब अकबर ने मेवाड़ पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया तो मेवाड़ के शासक महाराणा उदय सिंह ने उस हमले का करारा जवाब देने के लिए राव जयमल की सहायता मांगी। परंतु, चितौड़ की जबरदस्त घेराबंदी हो जाने पर महाराणा और उनके परिवार को किला छोड़ना पड़ा ताकि आगे लंबी लड़ाई लड़ी जा सके। उस समय, महाराणा उदय सिंह ने जयमल को युद्ध का प्रधान सेनापति नियुक्त किया। इसके बाद हुई लंबी लड़ाई में राव जयमल ने मेवाड़ी सैन्य बलों का नेतृत्व करते हुए विशाल मुगल सेना से लोहा लिया और अपने अद्भुत सैन्य कौशल का परिचय दिया।

जबरदस्त कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, जयमल ने आक्रमणकारियों पर इस तेजी से हमला करना जारी रखा कि जल्द ही गतिरोध की स्थिति बन गई। किले की प्राचीरों को नुकसान पहुँचाती भयंकर गोलाबारी, जानलेवा तीरों की बौछार और वीरगति को प्राप्त होने वालों की बढ़ती संख्या के बावजूद राव जयमल ने दोगुनी ताकत से दुश्मनों पर हमला किया। उन्होंने लगभग एक वर्ष से अधिक तक मोर्चा संभाले रखा परंतु सैनिकों की संख्या तथा संसाधनों में बड़े अंतर के कारण जब बाजी मेवाड़ के हाथों से निकलती प्रतीत हो रही थी, तो जयमल ने इस युद्ध को अंजाम तक पहुँचाने की ठानी। जयमल ने अपने उन विश्वस्त सैनिकों, जिन्होंने उनके साथ रक्त बहाया था, के साथ किले का द्वार खोला और पूरी ताकत से दुश्मन पर टूट पड़े। चितौड़ के किले के द्वार पर जयमल शहीद हो गए जहां उनकी बलिदान की गाथा कहता स्मारक के रूप में आज भी मौजूद है।

जयमल की जांबाजी तथा अदम्य साहस की शौर्य गाथा न केवल उनके अपनों ने गायी बल्कि उनके दुश्मनों ने भी मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा एवं सराहना की। अकबर, उसके सिपहसलार और मुगल इतिहासकार, सबके सब उस अद्भुत बहादुरी के आगे नतमस्तक थे। राव जयमल ने आक्रमणकारी सेनाओं का डट कर मुकाबला किया। चितौड़ के इस घमासान युद्ध के बाद आगरा किले के मुख्य द्वार पर इस महान योद्धा के सम्मान में हाथी पर सवार जयमल की पत्थर की प्रतिमा स्थापित की गई। जयमल वास्तव में अपने समय के सबसे प्रभावशाली और अग्रणी राजनीतिज्ञों में से थे, जिन्होंने न केवल प्रांतीय बल्कि संपूर्ण साम्राज्य के स्तर पर महत्वपूर्ण घटना क्रम को प्रभावित किया।

डाक विभाग, राव जयमल राठौड़ पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट / प्रथम दिवस
आवरण / विवरणिका : श्री शंख सामंत
विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	201600
Stamps Printed	:	201600
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00